

अस्मितावादी विमर्श : विविध संदर्भ



सम्पादक

रामचन्द्र रजक

ISBN : 978-93-84999-33-9

कॉपीराइट :
सम्पादक
*

प्रकाशक :
संरचना प्रकाशन
30, थार्नहिल रोड
इलाहाबाद-1
*

वितरक :
राका प्रकाशन
40ए, मोतीलाल रोड
इलाहाबाद-2
*

संस्करण
2017
*

मूल्य : 250 / - रुपये मात्र

मुद्रक :
संगम ऑफसेट
तालाब नवल राय, इलाहाबाद

अस्मितावादी विमर्श : विविध संदर्भ
द्वारा रामचन्द्र रजक

अनुक्रमणिका

भूमिका	7
1. स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता का सवाल प्रो० शैल पाण्डेय	21
2. भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री विमर्श और हिन्दी कहानी डॉ० लालसा यादव	25
3. स्त्री-अस्मिता के सवाल और अन्या से अनन्या डॉ० गौरी त्रिपाठी	37
4. स्त्री अस्मिता का सवाल : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार सरिता निर्मल	45
5. गोपुली गफूरन : एक स्त्री की संघर्ष यात्रा डॉ० संगीता	54
6. स्त्री-विमर्श की अवधारणा अखिलेश कुमार	60
7. दो पाटों के बीच में डॉ० आदित्य कुमार त्रिपाठी	81
8. साहित्य में स्त्री अस्तित्व डॉ० कविता सिंह	89
✓ 9. संस्कृत साहित्य और हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता का प्रश्न डॉ० अरविन्द कुमार	93
10. स्त्री विमर्श के अन्तर्विरोध अन्तिमा चौधरी	106

संस्कृत साहित्य और हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता का प्रश्न

डॉ० अरविन्द कुमार

स्त्री विमर्श वस्तुतः पाश्चात्य जगत की सामाजिक मान्यताओं की एक कसौटी है। जहाँ युगों-युगों तक लिंग तथा सामाजिक स्तर के आधार पर राजनीतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक अधिकारों से मानवमात्र के एक वर्ग विशेष को वंचित रखा गया। जहाँ का मनुष्य व्यक्तिवाद अवधारणा से ग्रसित था। उसने महत्त्व दिया ऐन्द्रिक सुख को व आधुनिक युग में व्यक्ति स्वातंत्र्य को। उसने बौद्धिक रूप से पदार्थों के तार्किक मूल्यांकन को महत्त्व दिया न कि भावनात्मक सबन्धों के आधार पर उनके मानवीय स्वीकरण को। उन्होंने सनातन भारतीय मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर खरा न उतरने वाला मानकर समझा। कांदिशीक होकर वे आज सनातन परम्परा में ही अस्तित्व के स्थायित्व का बीज खोजते दिखाई दे रही हैं।

साहित्य जीवन की अनुभूति के प्रकाशन का एक माध्यम है। साहित्य की अबाध धारा जीवन के विविध आयामों को निरंतर विमर्शोन्मुख करती है। स्त्री विमर्श भी मानव के जीवन संदर्भित विमर्श का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जिसके सम्यक स्वरूप को तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक हम मानव जीवन से उस प्रस्थान बिन्दु तक न जाये, जहाँ मानव एक संस्कारित जीवन की ओर उन्मुख हुआ है। आदिकाल में रासों ग्रंथ में स्त्री चेतना रही, परन्तु उसे वीर काव्यों तक सीमित न लिया, गया संस्कृत साहित्य और हिन्दी साहित्य के आज स्त्री विमर्श को बहुत सशक्त रूप से मुखरीत किया गया, परन्तु आलोचकों द्वारा उसका आकलन उस